शोधपत्र- हिन्दी

March, 2010

निराला की वेदना

* प्रा. डॉ. आर. पी. आरदवाड

* हिन्दी विभागाध्यक्ष, सरस्वती महाविद्यालय, केज

सूर्यकांत त्रिपाठी निरालाजी ने जीवन में मरण को वरण किया और व्यथा ही उनके जीवन की कथा रही किंतु कुकुरमुत्ता के प्रति वे हमेशा प्रतिबध्द रहें उनका हृदय करूणा का सागर और वेदना का आगार हैं। उनकी वेदनानुभूति ने ही उन्हें वैश्विक कवि बनाया है। उनकी वेदना मानव को विराटरूपी जीवन प्रदान करना चाहती है। इसी कारण उनकी वैयक्तिक वेदना व्यक्तिगत न रहकर वैश्विक बन जाती है। उनकी वेदना जातिविरहित, वर्णविरहित, वर्गविरहित समताधिष्ठित समाज रचना का सपना देखती है। निराला के काव्य में सर्वसाधारण मनुष्य के प्रति सहवेदना, सहानुभूति प्रकट हुई है। वे साधारणों के दुःख से दुःखी होते हैं। उन्होंने जीवन की समता विषमता को बुनियाद से समझ लिया था। उनकी कविता में हृदय की संवेदना अलग–अलग स्तर तथा स्वरूप लेकर प्रकट हुई हैं। उनके वेदना की नींव एक होते हुए भी संवेदनाएँ विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होती है। 'अनुष्टुप छंद' में सहजगति से उत्पन्न हुए रामायण के प्रथम श्लोक की पृष्ठभूमि में वाल्मीकि के मन में उत्पन्न हुई करूणा थी, उसमें क्रौंच पक्षी की मृत्यु और विरह की वेदना का अहसास प्रस्तुत करूणा में निहित है। निराला का हृदय परिस्थिति से जूझते–जूझते, लडते–झगडते इतना धैर्यशील बना था कि उनके स्वभाव में निश्चित दृढता और वीरता की अभिन्नता बन गयी थी। ऐसे शूर निराला जीवन संग्राम के योद्धा ही थे। किंतु करूणा उनके रग–रग में बसी थी।

निराला अपनी दैहिक और आंतरिक सामर्थ्य से बडे–बडे संघर्षो में दतचित्त रहें। उनकी जगह अगर कोई साधारण आदमी होता तो अंतर्मन से टूटने के बाद दुनियादारी के बाहय व्यवहारों के लिए असमर्थ बन जाता परंतु निराला टूटे नहीं ।बाहय संघर्षो में भी संघर्षशील रहें। निराला ने दूसरों के प्रति सहानुभूति जतायी तथा शोषण का विरोध मानवता की सद्‌भावना से प्रेरित है एवं सर्वहारावर्ग की भूख मिटाने का अथक प्रयास किया। उन्होंने रामकृष्ण मिशन में भिखारियों के लिए भोजन का प्रबंध किया था । वे कहते हैं –*'मैंने 'मैं' शैली अपनायी।/देखा दुःखी एक निज भाई।/दुःख की छाया पडी हृदय में/झट वेदना उमड आयी।* ''1 निराला की कारूण्यपूर्ण जर्जरता की मात्र अनुभूति नहीं, वह वेदना के रूप में व्यक्त होती है । 'वृत्ति' कविता में व्यक्त आंतरिक वेदना मन को छू लेती है –*'देख चुका जो .... /जो आए थे । /चले गए।/मेरे प्रिय सब भूल गये ।*'2 प्रियजनों के वियोग की वेदना एक आह बनकर निकली है । इसलिए तो वे कहते हैं, *''शोक–दुःख–जर्जर इस नश्वर संसार की ।शूद्र सीमा ।*'3 वे भले ही नश्वर संसार की सीमाओं को शूद्र समझें, दुःख दर्द से भरी समझे परंतु उनका हृदय स्थल का आशावाद कुम्हलाया नहीं था – *''आशा की प्यास । एक रात में भर जाती है ।* ''4 निराला की वेदना की कसक आशावादी है । उन्हें प्रियजनों का वियोग इतनी मात्रा में सहना पडा कि उनके लिए हमेशा विरहाग्नि का ही जीवन भुगतना पडा। वे प्रश्नांकुल होकर पूछते हैं, *''क्या तुम व्याकुल होती ?/मेरे पर रोती ?/ मेरे नयनों में न अश्रु प्रिय आता/मौन दृष्टि का मेरा चिर अपनाव।*'5

इन शब्दों में पत्नी के प्रति की वेदना अत्यंत उत्कट बन पडी हैं। निराला ने सुख को 'अस्थिर' माना है । उनके जीवन में सुख हमेशा ही अस्थिर रहा था। वे 'पारस' कविता में यही भावव्यक्त करते हैं। उनके जीवन का सुख अस्थिर था। हार–जीत, आशा–निराशा की धूपछाँव का खेल अविरत रहा है। निराला के हृदय पर संसार के इस आशश्वत रूप की गहरी छाप है। वे अपनी एक कविता में कुसुम–भ्रमर के प्रतीक द्वारा संसार के आशश्वत को शब्दांकित किया हैं। उनकी प्रार्थना में निहित विनम्रता 'जीवन भर दो' गीत में प्रतीत होती है। 'पथ पर मेरा जीवन भर दो ' न केवल विनम्रता बल्कि सघन कारूण्यभाव की अभिव्यक्ति सहज तरंगों के भाँति दृष्टिगत होती है । अतीत में खोए निराला कहते हैं –

''बहती जाती साथ तुम्हारे स्मृतियाँ कितनी ।/दग्ध चिता के कितने हाहाःकार।/नश्वरता की थी सजीव जो कृतियाँ कितनी।/अबलाओं की करूण पुकार'6 निराला की करूणाभरी वेदना जनवादी तथा सर्वस्पर्शी है । वह उनका आत्मबोध करती है । उनकी वेदना का व्यक्त रूप अस्थिर है परंतु वह दोहरा है,– जैसे निजी और सामाजिक। 'तरंगो के प्रति' कविता में उनकी आंतरिक करूणा सामाजिक व्यापकता धारण

कर प्रकट हुई है । उसी तरह 'भिक्षुक' कविता है। ***''वह पथ पर आता/दो टूक कलेजे के कर जाता।/भूख से सूख ओढ जब जाता ।/घूँट आँसुओं के पीकर रह जाता ''***7/इसी सामाजिक संवेदना ने 'खँडहर के प्रति' कविता में उनके शब्दों ने अधिक व्यापक अर्थ ...... राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि प्रदान किया है । वे लिखते हैं ***''आर्त भारत ! जनक हूँ मैं/जैमिनी – पतंजली – व्यास – नपृषियों का।/तेरा ही बढाया मान।/सुख की तृष्णा से अपनाया है गरल ।''***8

महात्मा गौतम बुद्ध की तरह निराला ने सुख की इच्छा को तृष्णा कहा है। महात्मा बुद्ध ने सभी दुःखों का मूल तृष्णा कहा है । तृष्णा कभी तृप्त नहीं होती। जीवन के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण से तृष्णा बढती है । परंतु वे जानते हैं कि 'मरण' में जीवन होता है । मृत्यु को स्वीकृत करने की शूरता को वे वंदनीय मानते हैं –***''मरण को जिसने वरा है/उसीने जीवन भरा है ''*** 9 /निराला की सामाजिक वेदना शोषित, दलित, दुनिया की नजर में तुच्छ व्यक्ति के बारे का दुःख उन्हें सलता है । वे अपना निजी दुःख बडी ही आत्मीयता से अभिव्यक्त करते हैं । उन्होंने 'विस्मृत–भोर' में स्पष्ट शब्दों में 'जीवन की गति' को 'अंध–तम–जाल' कहा है और अपने 'फस जाने' का धोखा भी बताया है । धोखे से ही किंतु आसू भरे नेत्रों से अपने स्वयं की खोज करने का सिलसिला जारी रखा है । वे लिखते हैं, ***''आँख लगी थी पल–भर देख,/नेत्र छल छलाए दो ।/आए आगे किसी अजाने दूर देश से चलकर ......।''***10 उनकी खोज तपस्या में बदल गयी है । उनके वैयक्तिक जीवन में प्रेम प्राप्ति का काल अल्प रहा । और दुःख ही जीवन की कथा रही। निराशाग्रस्त मानसिकता में कवि कहतें है –

''मर्मस्थान में जो शूल। तुम्हें कैसे, प्रिय, बतलाऊँ मैं ? /कैसे दुःख गाथा गाऊँ मैं ? वैसे ही मैंने अपना सर्वस्व गँवाया। विफल–हृदय ता आज दुःख देखता ...... ।''11 निराला की व्यक्तिगत वेदना ने कहीं अनेक जगह पर बृहत स्वरूप प्राप्त किया है। उस बृहत स्वरूप की परिधि में सामाजिकता तथा राष्ट्रीय भाव समा गया है । उदाहरण के लिए 'तुलसीदास'। निराला अपनी मातृभूमि की परतंत्रता की दयनीय स्थिति तथा अंग्रेजी की उपनिवेशन की आर्थिक नीति से अलिप्त नहीं है। अत्यंत ओजपूर्ण भाषा में आव्हान के भावभीनी विचारों की अभिव्यक्ति कर गुलाम समाज की वेदना जागृत करने में सफल हुए है। निराला की वेदना ने 'सरोज–स्मृति' में हाहाःकार का स्वरूप धारण किया है। हृदय के अंतस्तल से निकली सहज सुंदर भाषा में अभिव्यक्ति संघर्ष और हार–जीत का स्त्रोत में प्रवाहित हुई है। सरोज के मत्यु पर अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए निराला लिखते हैं – ***''धन्य, मैं पिता निरर्थक था, /कुछ भी तेरे हित न कर सका।/जाना तो अर्थागमोपाय,/पर रहा सदा संकुचित काय ।''***12 सुपुत्री के विवाह के लिए एक धन न जोडने का दुःख पिता ही जानता है। अपने आर्थिक अभावों की वेदना की अनुभूति किसी भी द्ररिद्री पिता के हृदय को होगी । सरोज का विवाह भी किसी आडंबर– ताम–झाम में नहीं हुआ 'सरोज–स्मृति' कविता के अंत में निराला के हृदय की सारी शोक वेदना शब्दांकित है – ***''दुःख ही जीवन की कथा रही, /क्या कहूँ आज, जो नहीं कही ।/ कन्ये, गत कर्मो को अर्पण कर,/करता हूँ तेरा तर्पण ।''***13/निराला के मन की पिता की वेदना और त्याग की भावना आज भी पाठकों के मन को उद्वेलित करती है । अत्यंत श्रेष्ठ स्तर की भावुकता अंर्तमन को छूती है । इसी कारण दूधनाथ सिंह ने निराला को आत्मस्थ, निजत्वपूर्ण और गतिशील कवि कहा है ।

सामाजिक वेदनानुभूति का एक स्तर दीन–दलितों के प्रति दया, करूणा, सहानुभूति का होता है। निराला तो प्रत्यक्ष दैनंदिन व्यवहारों में इसी अनुभूति के भूक्तभोगी थे । कारूणिक सामाजिक अनुभूति 'तोडती पत्थर' में दिखाई देती है। प्रतिकूल हवा, पानी, धूल–धूप में निर्विकार मन से पत्थर तोडती वह दीन–दलित महिला निराला के मन में करूणा उत्पन्न करती है क्योंकि स्वयं निराला भी प्रतिकूल स्थितियों में भी पत्थर तोड रहे थे । निराला ने अपनी साधन हीनता पर भी गौर किया है। सृजनशीलता में शिथिलता, प्रियजनों का चिरवियोग, वृद्धावस्था में किसी अपेक्षित सहारे का अभाव ये सारे दोष झेलकर भी वे निराश नहीं है – ***''मैं अकेला देखता हूँ/आ रही मेरे दिवस की सांध्यबेली।/पके आधे बाल मेरे । हुए निष्प्रभ गाल मेरे।/कोई नहीं ... कोठ । नहीं भेला ...... ।''***14 निराला ने अपनी लघुरूपा व्यक्तिगत वेदनानुभूति को अधिक व्यापक रूप देकर सामाजिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने का मानवतावादी कार्य किया है। दुःख, पीडा, संत्रास से व्यक्ति मन में टूट जाता है । निराला ने आजीवन हर एक बात के लिए संघर्ष लिया । उस संघर्ष की हार–जीत की बुनियाद में वेदना थी जो उनके काव्य में प्रतिबिंबित हुई । उनकी वेदना व्यक्तिगत नहीं अपितु विराट रूप धारण करती है ।

संदर्भ ग्रंथ

1) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला–परिमल, पृष्ठ–97,98 2)–वही, पृष्ठ–52 3)–वही, पृष्ठ–46 4)–वही, पृष्ठ–50 5)–वही, पृष्ठ–506)–वही, पृष्ठ–67) –वही, पृष्ठ–103 8) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला–अपरा, पृष्ठ–132 9) –वही, पृष्ठ–142 10) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला– परिमल, पृष्ठ–126 11) –वही, पृष्ठ–121 12) –वही, पृष्ठ–146 13) –वही, पृष्ठ–147 14) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला– अपरा, पृष्ठ–158